## ५६ रास्नावान्-अच्छावाकचमस

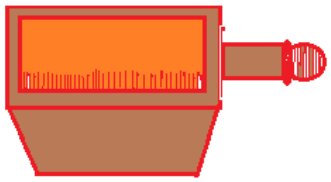

५६ रास्नावान्-अच्छावाक्चमस- यह पात्र अच्छावाक् नामक ऋत्विज का चमस पात्र है। इसके दण्ड में रस्सी लिपटी रहती है।

## ५७ मयूख-आग्नीध्रचमस

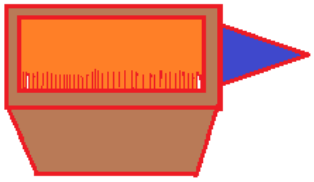

५७ मयूख-आग्नीध्रचमस- यह पात्र आग्नीध्र नामक ऋत्विज का चमस पात्र है। **इसका दण्ड त्रिकोणाकृति का** बना होता है।

## ५८ सप्तदशाररथचक्रम्

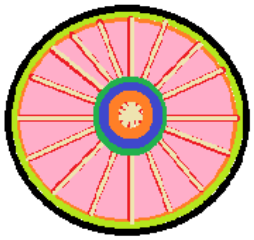

५८ सप्तदशाररथचक्रम्- रथ के चक में अक्ष से निचले हिस्से तक को जोड़ने वाला दण्डा अर कहलाता है। ऐसे सतरह अरों वाला रथ का चक सप्तदशाररथचक कहलाता है।

## ५९ राजासन्दी

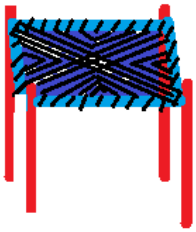

५९ राजासन्दी- सोम को राजा कहा जाता है। ''सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा'' (शु.य. सं.-9/40) पूजनीय होने से उसे देवयजन में आसन्दी पर स्थापित किया जाता है। यह चार पाये की मूंज से बीनी रहती है। ''औदुम्बरीमासन्दीम् ।'' दे.या.प.- पृष्ठ 260

## ६० ग्रहपात्र

६० ग्रहपात्रम्- ये पात्र दर्शपूर्णमास याग में प्रयुक्त उलूखल के आकार के होते हैं। अनेक होने के कारण इनमें अलग अलग चिह्न होते हैं। इनमें सोमरस लेकर आहुति दी जाती है। इनके निर्माण के लिए विकंकत काष्ठ को उपयुक्त माना गया है। ''ग्रहचमसद्रोणकलशादीनि।'' दे.या.प.- पृष्ठ 7


# निर्माता - डॉ० सुन्दरनारायणझा

**सहायक-आचार्यः,वेदविभागः**

**श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्,**

**कटवारियासरायः, नवादेहली-११००१६**